अद्वैत वेदान्त में मोक्ष का स्वरूप एवं साधन

सत्यकाम मिश्र

अविद्यानिवृत्तिरेव मोक्षः चूंकि जीव का बन्धन अविद्या.त है, अतः अद्वैत वेदान्त में अविद्या निवृत्तिमात्र मोक्ष है। भारतीय दर्शन के केन्द्र में मोक्ष की समस्या सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। मोक्ष को ही परम् पुरूषार्थ माना जाता है। इसीलिए भारतीय दर्शन को अन्य शब्दों में मोक्षशास्त्र भी कहा जाता है। भारतीय दर्शन पाश्चात्य दर्शन की भाँति बौद्धिक पिपासा की तृप्ति मात्र नहीं है, अपितु जीवन की समस्या के समुचित समाधान के लिए है। पुनः अद्वैत वेदान्त तो भारतीय दर्शन के शिखर पर स्थित है। यह मोक्ष की व्याख्या अत्यन्त मौलिक ढंग से करता है।

मोक्ष ज्ञानरूप है, अर्थात ज्ञान से ही मोक्ष की प्राप्ति होती है। वह पारमार्थिक ज्ञान है। जिसमें जीव एवं ब्रह्म के अभेद की अनुभूति होती है साधक को 'मैं ब्रह्म हूँ' का ज्ञान प्राप्त हो जाता है।